नई वाचा-
एक नई व्यवस्था

''सो हे मेरे भाइयो, तुम भी मसीह की देह के द्वारा व्यवस्था के लिए मरे हुए बन गए, कि उस दूसरे के हो जाओ, जो मरे हुओं में से जी उठा: ताकि हम परमेश्वर के लिए फल लाएं। क्योंकि जब हम शारीरिक थे, तो पापों की अभिलाषायें जो व्यवस्था के द्वारा थीं, मृत्यु का फल उत्पन्न करने के लिए हमारे अंगों में काम करती थीं। परन्तु जिस के बन्धन में हम थे उसके लिए मर कर, अब व्यवस्था से ऐसे छूट गए, कि लेख की पुरानी रीति पर नहीं, बरन आत्मा की नई रीति पर सेवा करते हैं'' (रोमियों 7:4-6)।

पुराने नियम की व्यवस्था में लोग जन्म से वाचा की संतान बनते थे अर्थात उनका जन्म व्यवस्था के अधीन होता था। वाचा उनके और परमेश्वर के बीच थी। यदि वे वाचा की शर्तों को पूरा करते, तो उन्होंने देश में दीर्घायु पाकर खुशहाल रहना था। यदि वे आज्ञा न मानते, तो उन्हें दण्ड तथा देश से निकाले जाने के परिणाम भुगतने पड़ने थे।

नई वाचा, जिसे व्यवस्था ने आवश्यक बताया था, पूर्ण रूप से नई और अलग पद्धति है। हमें नई वाचा की संतान बनने के लिए, नये सिरे से जन्म लेना आवश्यक है (यूहन्ना 3:3-5)। नई वाचा के अधीन प्रतिज्ञा की हुई अनन्त अर्थात स्वर्गीय आशीष पाने से पहले (1 पतरस 1:3, 4) नया जन्म होना आवश्यक है। नई वाचा हमें एक मित्र भी उपलब्ध कराती है जिसकी हम प्रेम और स्वेच्छा से सेवा करके ईश्वरीय भय से उसके पीछे चल सकते हैं। नई वाचा में हम मन से सेवा करते हैं। हम यीशु के लिए जीना *चाहते* हैं जो हमारा उद्धारकर्त्ता है।

आकाश और पृथ्वी की रचना से पहले ही, परमेश्वर ने ठान लिया था कि वह मनुष्य जाति का उद्धार व्यवस्था के द्वारा नहीं, बल्कि यीशु के द्वारा करेगा (प्रेरितों 2:23; 1 पतरस 1:18-20)। व्यवस्था से वह *आशीष* नहीं मिली जिसकी परमेश्वर ने इब्राहीम के वंश के द्वारा देने की प्रतिज्ञा की थी (उत्पत्ति 22:18; गलतियों 3:16)। बल्कि, इससे इसको मानने वाले *श्राप* के अधीन आ गए। व्यवस्था में कहा गया था कि यदि कोई इसकी हर एक आज्ञा को पूरा नहीं करता (याकूब 2:10), तो वह श्रापित है (गलतियों 3:10) और किसी ने भी (यीशु को छोड़कर) व्यवस्था को पूर्णतया पूरा नहीं किया।

इसका अर्थ यह नहीं है कि व्यवस्था के कारण इब्राहीम के साथ की गई उसके वंश अर्थात यीशु के द्वारा संसार की सब जातियों के लिए परमेश्वर की वाचा रद्द हो गई हो। पौलुस ने समझाया कि ''... जो वाचा पहले से पक्की की थी, उसको व्यवस्था चार सौ तीस वर्ष के बाद आकर नहीं टाल देती, कि प्रतिज्ञा व्यर्थ ठहरे'' (गलतियों 3:17)। व्यवस्था से आशीष नहीं आ सकी, क्योंकि इससे सब श्राप के अधीन हो गए। यह श्राप व्यवस्था के द्वारा नहीं हटाया जा सकता था, बल्कि इसे मसीह के द्वारा हटाया जाना था। मसीह ने आकर, ''हमें मोल लेकर व्यवस्था के स्राप से छुड़ाया क्योंकि लिखा है, जो कोई काठ पर लटकाया जाता है वह स्रापित है'' (गलतियों 3:13)। गलतियों 2:21 में हम पढ़ते हैं, ''मैं परमेश्वर के अनुग्रह को व्यर्थ नहीं ठहराता, क्योंकि यदि व्यवस्था के द्वारा धार्मिकता होती, तो मसीह का मरना व्यर्थ होता।''

मसीह की व्यवस्था

पुरानी और नई वाचा में अन्तर व्यवस्था के होने या न होने में नहीं बल्कि इन व्यवस्थाओं की प्रकृति में है। पहली वाचा उन लोगों के मानने के लिए नियमों की एक पद्धति थी जिनके मन नहीं बदले थे। परमेश्वर की व्यवस्था उनके हृदयों पर नहीं लिखी हुई थी। नई वाचा लोगों के शारीरिक पहलू पर नियन्त्रण करने वाले लिखित नियम से बढ़कर है। अब हमें एक ऐसा नियम मिला है जो हमारे जीवन को बदलने के लिए हमारे हृदयों पर लिखा गया है। मसीही बनने से हमें नया जीवन मिला है क्योंकि मसीह, हमारा आदर्श हमारे मनों में रहकर राज्य करता है।

यीशु मसीह की एक व्यवस्था है। पौलुस ने ''मसीह की व्यवस्था को पूरा'' करने के बारे में लिखा (गलतियों 6:2)। पौलुस ने अपने बारे में कहा कि ''मैं ... परमेश्वर की व्यवस्था से हीन नहीं, परन्तु मसीह की व्यवस्था के आधीन हूं ...'' (1 कुरिन्थियों 9:21)।

''मसीह की व्यवस्था'' परमेश्वर को पसन्द आने वाले अच्छे कामों पर आधारित दिखावे की व्यवस्था नहीं है। बल्कि, यह व्यवस्था मसीह के कामों में विश्वास पर आधारित है अर्थात ऐसा विश्वास जो हमें उसके वचन में प्रकट उसकी इच्छा को पूरा करने की प्रेरणा देता है। हमें समझ लेना चाहिए कि हमारा उद्धार उसकी ओर से होता है, हमारे अच्छे कर्मों से नहीं। मसीह की व्यवस्था कर्मों की नहीं, बल्कि विश्वास की व्यवस्था है। ''तो घमण्ड करना कहां रहा? उस की तो जगह ही नहीं: कौन सी व्यवस्था के कारण से? क्या कर्मों की व्यवस्था से? नहीं, बरन विश्वास की व्यवस्था के कारण। इसलिए हम इस परिणाम पर पहुंचते हैं, कि मनुष्य व्यवस्था के कामों के बिना विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरता है'' (रोमियों 3:27, 28)।

हुग जे. शॉनफील्ड ने इस आयत का अनुवाद ठीक ही किया है: उसका हिन्दी रूप इस प्रकार है, ''क्या हम व्यवस्था को व्यर्थ ठहराने के लिए विश्वास का प्रयोग कर रहे हैं? परमेश्वर ऐसा न कराए! बल्कि हम तो व्यवस्था को दृढ़ कर रहे हैं।''[1] स्पष्ट करने के लिए उसने यह फुटनोट ''विश्वास की व्यवस्था को समझा कर''[2] जोड़ा।

कैनथ एस. वुएस्ट ने इस प्रकार अनुवाद किया: ''क्या हम इस ऊपर लिखे विश्वास से व्यवस्था को नकार रहे हैं ? ऐसा नहीं सोचना चाहिए। निश्चय ही, हम व्यवस्था को पक्का करते हैं।''[3]

विश्वास प्रतिबन्ध रहित या बिना सिद्धांत के नहीं है, बल्कि यह तो दृढ़ सिद्धांतों पर आधारित है। इस कारण हम ''विश्वास की व्यवस्था'' की बात कर सकते हैं। इसी को तो यीशु की व्यवस्था कहते हैं।

पौलुस ने और भी लिखा, ''क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की, और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतन्त्र कर दिया'' (रोमियों 8:2)। मसीह की व्यवस्था को विश्वास की व्यवस्था और आत्मा की व्यवस्था कहा गया है। इसे ''परमेश्वर की व्यवस्था'' (रोमियों 7:22, 25; 1 कुरिन्थियों 9:21) और ''स्वतन्त्रता की व्यवस्था'' (याकूब 1:25; 4:12) भी कहा जाता है। मसीह ने हमें व्यवस्था से स्वतन्त्र नहीं किया, बल्कि उसने व्यवस्था ही बदल डाली (इब्रानियों 7:12)।

यदि हम किसी प्रकार की व्यवस्था के अधीन नहीं हैं, तो हम पाप नहीं कर सकते: ''जहां व्यवस्था नहीं वहां उसका टालना भी नहीं''(रोमियों 4:15ख); ''परन्तु जहां व्यवस्था नहीं, वहां पाप गिना नहीं जाता'' (रोमियों 5:13ख)। फिर, यदि ऐसा होता, तो मसीह को मरने की आवश्यकता नहीं थी; क्योंकि यदि हमें कोई व्यवस्था नहीं मिली, तो हम ने कोई पाप नहीं किया है जिसे क्षमा करवाने के लिए यीशु मरता। मसीही लोग बिना व्यवस्था के नहीं हैं अर्थात वे तो यीशु की व्यवस्था के अधीन हैं।

प्रेम की व्यवस्था

पहली वाचा दूसरों के साथ बुराई न करने के संदर्भ में बनाई गई थी अर्थात हत्या न करना, झूठ न बोलना, चोरी न करना, और किसी दूसरे की पत्नी से व्यभिचार न करना। इसमें दूसरों की भलाई के लिए किए जाने वाले कामों के बारे में बहुत कम बताया गया है। (देखिए लैव्यव्यवस्था 19:18क)। मसीह की व्यवस्था कहती है, ''तुम एक दूसरे के भार उठाओ, और इस प्रकार मसीह की व्यवस्था को पूरा करो'' (गलतियों 6:2)। इसमें किसी दूसरे की हानि न करके आगे बढ़कर दूसरों की सेवा करने के लिए कहा गया है। यीशु की व्यवस्था मन को देखती है, जिसे केवल परमेश्वर ही जांच सकता है। व्यवस्था में अधिकतर शारीरिक कामों की ओर ध्यान दिया जाता था; समाज ही नियम तोड़ने पर विचार करता, उसका न्याय करता और दण्ड देता था (लैव्यव्यवस्था 19:15)। मसीह की व्यवस्था में दूसरों को हानि पहुंचाने से बचने के बजाय उनके प्रति सकारात्मक कार्यों को शामिल किया गया है। सबसे बड़ा अन्तर यह है कि विधियों को पूरा करने की जिम्मेदारी के बजाय अब हम व्यक्ति से सम्बन्ध बना सकते हैं। अब हम पत्थर पर लिखी आज्ञाओं के बजाय मसीह की ओर देख सकते हैं, जो हमारा आदर्श है।

मसीह की नई वाचा मन पर लिखी होनी चाहिए। यिर्मयाह ने यही भविष्यवाणी की थी: ''परन्तु जो वाचा मैं उन दिनों के बाद इस्राएल के घराने से बाधूंगा, वह यह है: मैं अपनी

व्यवस्था उनके मन में समवाऊंगा, और उसे उनके हृदय पर लिखूंगा; और मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा, और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे'' (यिर्मयाह 31:33)।

यिर्मयाह ने यह भविष्यवाणी नहीं की थी कि परमेश्वर अपने लोगों को अब कोई व्यवस्था नहीं देगा, बल्कि उसने यह भविष्यवाणी की थी कि वह अपनी व्यवस्था उनके हृदयों पर लिखेगा। अपनी आज्ञाओं द्वारा प्रसिद्ध होने के बजाय परमेश्वर अपनी दया के लिए जाना जाएगा। भविष्यवक्ता ने स्पष्ट किया कि परमेश्वर के लोग उसे कैसे जानेंगे: ''क्योंकि मैं उनका अधर्म क्षमा करूंगा, और उनका पाप फिर स्मरण न करूंगा'' (यिर्मयाह 31:34ख)। हमारे पापों के लिए यीशु के बलिदान के द्वारा, परमेश्वर ने अपने आपको करुणा, प्रेम, दया, और अनुग्रह के परमेश्वर के रूप में दिखाया। इस नई वाचा के अधीन, परमेश्वर को यीशु के द्वारा समझा जाता है। इसलिए, हम परमेश्वर की सेवा करते हैं क्योंकि परमेश्वर ने स्वयं एक प्रकार से यीशु के द्वारा अपने लोगों की सेवा की है जिससे उसकी बुद्धि और ज्ञान की समझ आती है (रोमियों 11:33)। यीशु के द्वारा, उसने अपने आपको प्रकट किया है (यूहन्ना 1:18)।

आत्मा का नयापन

मूसा की व्यवस्था और मसीह की व्यवस्था में एक और बड़ा अन्तर पवित्र बनने के हमारे ढंग में है। ''हम ... आत्मा की नई रीति पर सेवा करते हैं'' (रोमियों 7:6ख)। मसीही व्यक्ति का उद्देश्य केवल व्यवस्था को पूरा करना नहीं, बल्कि उसका उद्देश्य उस प्रेम की प्रेरणा और यीशु की महिमा पर आधारित है (यूहन्ना 14:15, 21, 23)।

एक मां अपने बेटे को बालों में कंघी करने, दांत साफ करने व नहाने की आज्ञा देकर उसके सुन्दर न दिखने पर चिन्तित हो सकती है। यही लड़का बड़ा होकर प्रेम में पड़ने पर बिना झिझक अपना ध्यान स्वयं ही रखने लगेगा। आज्ञाओं को मानकर सुन्दर बनने के बजाय, वह उस लड़की की इच्छाओं को पूरा करने लगता है, जिससे वह प्रेम करता है। इस प्रकार अब वह बदल गया है।

पौलुस के साथ भी यही हुआ। मसीह के पास आने के बाद, उसने व्यवस्था में मिलने वाली धार्मिकता की चाह नहीं की। इसके बजाय उसने यीशु का ज्ञान पाना चाहा ताकि वह उसे प्रसन्न कर सके (फिलिप्पियों 3:7-14)। उसने अपने आपको यीशु की सेवा (गलतियों 2:20) और उसके साथ अपने सम्बन्ध के कारण यीशु के साथ क्रूस पर चढ़ा दिया। हमारे अन्दर यह परिवर्तन बपतिस्मा लेते ही आना चाहिए।

> सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें। क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय ही उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे। क्योंकि हम जानते हैं, कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर व्यर्थ

हो जाए, ताकि हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें (रोमियों 6:4-6)।

मानने के लिए एक आदर्श

नई वाचा में, हमारा लक्ष्य न केवल यीशु की आज्ञाओं को मानना है बल्कि यीशु के जैसे बनना भी है। ''यदि हम उसकी आज्ञाओं को मानेंगे, तो इससे हम जान लेंगे कि हम उसे जान गए हैं। ... जो कोई यह कहता है, कि मैं उसमें बना रहता हूं, उसे चाहिए, कि आप भी वैसा ही चले जैसा वह चलता था'' (1 यूहन्ना 2:3-6)। यदि हम यीशु की आज्ञाओं को मानते हैं और वैसे ही चलते हैं जैसे वह चलता था तो हम उसे *जानते* हैं।

यीशु ने हमें जीवन जीने के लिए अपना उदाहरण दिया है। ''और तुम इसी के लिए बुलाए भी गए हो क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिए दुख उठाकर, तुम्हें एक आदर्श दे गया है कि तुम भी उसके चिह्न पर चलो'' (1 पतरस 2:21)। उसकी मृत्यु दूसरों की सेवा करने का भी एक नमूना है। ''हम ने प्रेम इसी से जाना, कि उसने हमारे लिए अपने प्राण दे दिए; और हमें भी भाइयों के लिए प्राण देना चाहिए'' (1 यूहन्ना 3:16)।

एक मसीही का लक्ष्य जीवन के हर पहलू में मसीह में बढ़ना है। नई वाचा पुरानी से इसी बात में अलग है। इसका लक्ष्य केवल आज्ञा पूरा करना ही नहीं, बल्कि मसीह का अनुसरण करना भी है। (देखिए फिलिप्पियों 2:5.)

सारांश

एक नई व्यवस्था के रूप में, मसीह की व्यवस्था एक नए प्रकार की सेवा की मांग करती है जो यीशु के जीवन के अनुसार हो। उसके प्रति हमारे प्रेम और सम्बन्ध के कारण हम उसे प्रसन्न करना चाहेंगे। हमें आज्ञा केवल इसलिए नहीं माननी चाहिए कि यह व्यवस्था की मांग है, बल्कि इसलिए क्योंकि हमारे बदल चुके मन यीशु का नमूना लेकर उसकी सेवा करना चाहते हैं।

हमें लेख की प्राचीनता में नहीं बल्कि आत्मा के नयेपन में सेवा करनी है।

आज्ञाएं व्यवस्था का आधार हैं

हर व्यवस्था में आज्ञाएं होती हैं। अन्य शब्दों में कहें तो आज्ञाएं ही व्यवस्था का आधार होती हैं। पौलुस ने यह लिख कर कि इस्राएलियों को दी गई परमेश्वर की व्यवस्था आज्ञा ही थी, इसका संकेत दिया (रोमियों 7:7, 8)। यीशु की व्यवस्था उन बातों पर आधारित है जिनकी आज्ञा यीशु ने दी है अर्थात वे बातें जो उसके सब नए चेलों को सिखाई जाती हैं और उनके द्वारा मानी जाती हैं (मत्ती 28:20)।

नई वाचा में ''आज्ञा'' बुरा शब्द नहीं है, क्योंकि यीशु से हमारा सम्बन्ध उसकी आज्ञाओं को मानने पर भी निर्भर है। यदि हम वह सब करते हैं जिसकी उसने आज्ञा दी है तो हम यीशु के मित्र हैं (यूहन्ना 15:14)। हम आज्ञा मानकर उसके प्रति अपना प्रेम दिखाते हैं (यूहन्ना 14:15)। वह हम से प्रेम करेगा, हम पर अपने आपको प्रकट करेगा और हमारे

साथ रहेगा यदि हम उसकी आज्ञा को मानते हैं (यूहन्ना 14:21, 23)। उसकी आज्ञाएं हमारे अब के जीवन के चाल-चलन का, (यूहन्ना 13:34; 14:21-23; 15:10, 12; 1 कुरिन्थियों 7:19; 14:37; 1 थिस्सलुनीकियों 4:2; 2 पतरस 3:2; 1 यूहन्ना 2:4; 3:22; 5:2, 3) और हमारे अनन्त जीवन पा सकने का आधार भी हैं (यूहन्ना 12:50)।

पाद टिप्पणियां

[1]हुग जे. शॉनफील्ड, सं. व अनु., *द ऑथेन्टिक न्यू टैस्टामेन्ट* (न्यूयॉर्क: मैन्टर बुक, 1958), 301. [2]वहीं, फुटनोट 203. [3]कैनथ एस. वुएस्ट, *रोमन्स इन द ग्रीक न्यू टैस्टामेन्ट,* वर्ल्ड स्टडीज़ इन द ग्रीक न्यू टैस्टामेन्ट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: Wm. B. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1955), 64.